
कहानियां नयी पुरानी
साला मैं तो साहब बन गया
जीना भी मुश्किल
मरना भी मुश्किल
निरंतर

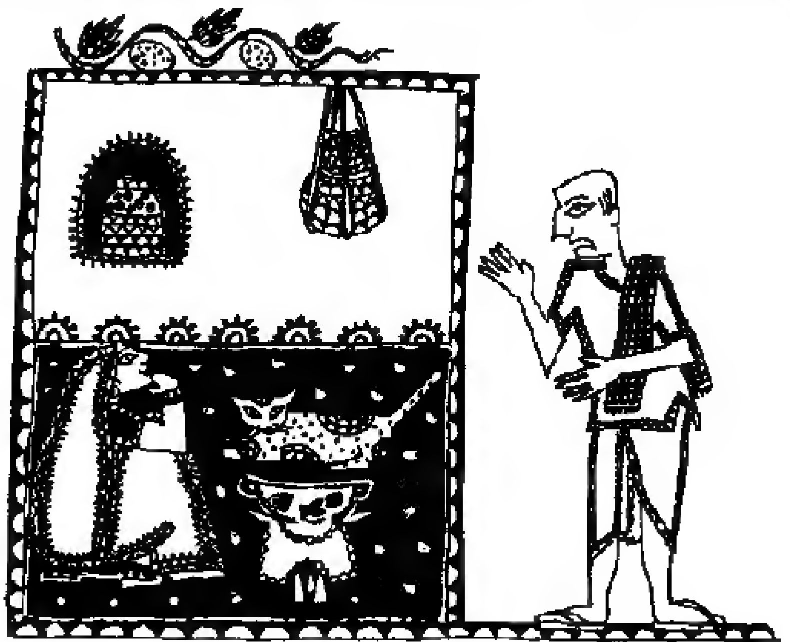
निताई के सींग



काका और काकी की जोड़ी बड़ी निराली थी। काका थे लम्बे और शान्त। काकी थीं ठिगनी और बातूनी। शादी को चालीस साल हो चुके थे। पर दोनों में प्यार अब भी बना हुआ था। उनका कोई बच्चा नहीं था। पर हां ! निताई नाम का एक बैल था। दोनों उससे बहुत प्यार करते। उसकी देखभाल मिल जुलकर करते।

एक बार काका–काकी का ज़बरदस्त झगड़ा हो गया। हुआ यूं कि काका नदी पर नहाने गये। नहाते समय गमछे में एक मछली आ फंसी। ताज़ी मछली लेकर काका सीधे घर पहुंचे। काकी से बोले – "नारियल–मिर्च डालकर फटाफट मछली बना दे। मैं खेत जोत कर आता हूं।" काकी खाना बढ़िया बनाती थीं। पर उस दिन काकी का मन कहीं और था। सवेरे भतीजे की शादी का संदेशा आया था। बहू कलकत्ता शहर की थी। काकी सोचने लगीं – 'कलकत्ते में तो शानदार

शादी होगी। खूब रौनक होगी। मैं भी इस बार नयी साड़ी लूंगी। रेशम की लाल किनारे वाली साड़ी। चूल्हे पर मछली पक चुकी थी। पर काकी अपने ख्यालों में डूबी थीं। सोच रही थीं, 'सब मेरी साड़ी देखकर कितना जलेंगे।' इतने में मछली जलने की महक आयी।



तभी काका घर पहुंचे। मछली जलते देख वह लगे काकी पर बरसने। "एक मछली नहीं बना सकती। कितना नुकसान कर दिया।" काकी भी चुप नहीं रहीं। बोलीं – "चालीस साल से पका कर खिला रही हूं। और आज इतना सा नहीं सह सके। जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती।" काका बोले – "ठीक है। देखें कब तक नहीं बोलती।" गुस्से में काकी झट बोलीं – "जब तक निताई के सींग नीले न हो जाये।"

काका भरी दोपहर में बाहर चल दिये। काकी ने काम निपटाया, फिर सो गयीं। उठीं तो शाम हो चुकी थी। गुस्सा तो अब भी था। पर रात होने तक दिमाग ठंडा हुआ। काकी सोचने लगीं – 'यह मैंने क्या

कह दिया। बैल के सींग भी कभी नीले होंगे।' अगले दिन तक तो काकी की हालत बुरी। कैसे बात करें काका से? और बात किये बिना रहा भी न जाये। दिन भर काकी परेशान रहीं। फिर रात को एक उपाय सूझा। झट अलमारी से नील का डिब्बा निकाला। और चल दीं निताई के खूंटे की ओर। अंधेरी रात में जैसे–तैसे पानी में नील घोला। और रंग दिये निताई के सींग नीले।



चैन की सांस लेकर घूमीं तो क्या देखा? सामने काका खड़े थे। काकी बोलीं – "आधी रात को तुम यहां क्या कर रहे हो ?" काका ने कहा – "नील का डिब्बा ढूंढ रहा था। सोचा मैं ही निताई के सींग रंग डालूं। वरना तुम तो बात करोगी नहीं।" तभी काकी के हाथ में नील और पानी दिखा। बस, फिर तो दोनों की हंसी रुकी ही नहीं।

नये मोड़



शिवदास ने अपनी बहू प्यारी को भंडारे की चाबी पकड़ायी। आंसू भरी आंखों से बोले– "अब गृहस्थी की देखभाल तुम्हारे ऊपर है।" जवान बेटे की मौत के बाद खेती बाड़ी की ज़िम्मेदारी उन पर आ पड़ी थी। पहले तो दिन भर बैठ कर गपशप ही करते। हां, एक काम ज़रूर करते थे। कभी कुछ देना लेना होता तो शिवदास कोठरी खोला करते। फिर उसे बन्द कर वह चाबी रख लेते। कोठरी में क्या अनमोल चीज़ें हैं, यह सबके लिये एक राज़ था। लेकिन अब प्यारी भी राज़ जान पायेगी। कुछ पल के लिए वह पति की मौत का दुख भूल पायी। आज वह घर की मालकिन बन गयी थी।

प्यारी ने अपने आप को घर के काम में झोंक दिया। वह कहीं किसी तरह की कमी रहने ही नहीं देती थी। घर में ससुर के अलावा देवर मथुरा था। और देवरानी दुलारी जो उसकी अपनी ही बहन थी। इन सबके अलावा घर में था जोखू, घर का पुराना नौकर। एक तरह से वह घर की नींव

था। घर की देख–रेख का ज़िम्मा उस पर था। जोखू प्यारी के साथ काम में लगा रहता। प्यारी को पता था – जो काम जोखू को सौंप दिया, उसके बारे में चिंता करने की ज़रुरत नहीं। पर जोखू मालिक लोगों की बात अक्सर टालने की कोशिश करता।

घर की सूरत तेज़ी से सुधरने लगी। लेकिन इस सब में हालत बिगड़ती गयी तो खुद प्यारी की। उसे न कपड़ों की सुध रहती, न साज श्रृंगार की। यही नहीं, घर को कम पैसों में चलाने का मतलब था – कभी कोई नाराज़, तो कभी कोई। एक दिन रूठने की बारी दुलारी की थी। उसने नये कड़ों की हठ पकड़ी। बहुत समझाने की कोशिश करने के बाद प्यारी को हार माननी ही पड़ी। जैसे ही दुलारी को कड़े मिले वह दौड़ी हुई गयी और अंदर बैठे मथुरा को दिखाने लगी। प्यारी दरवाज़े की आड़ में छिपी उनको देखने लगी। दुलारी उससे तीन ही साल छोटी थी। पर दोनों की हालत में कितना अंतर था। उसकी आंखें प्यार का वह नज़ारा एक टक देखती रहीं।

धीरे–धीरे समय बीतता गया। शिवदास भी चल बसा। मथुरा और दुलारी के तीन बेटे हो चुके थे। प्यारी बच्चों पर अपना सारा प्यार लुटाती। उनके लिए नये कपड़े लाना, स्कूल की किताबें खरीदना – सब वही करती। पर हां, खिलौने लाने की ज़िम्मेदारी थी जोखू पर। जब भी किसी नये खिलौने की मांग होती, जोखू कहता – "मालकिन आप परेशान न हों। मैं बाज़ार ले जाकर दिलवा दूंगा।"

एक दिन घर बिल्कुल ही खाली हो गया। मथुरा, दुलारी और बच्चे शहर चले गये। प्यारी ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की। पर मथुरा ने साफ कहा – "गांव में रखा ही क्या है। हम आपकी बहुत



इज़्ज़त करते हैं। लेकिन अपना यह फैसला नहीं बदल सकते।" प्यारी के बस आंखों में आंसू भर आये। जोखू भी कुछ कह नहीं सका। चुपचाप उनको जाता देखता रहा।

अब घर में दो ही लोग थे – प्यारी और जोखू। कई दिन तक प्यारी सुनसान घर में बेहोश सी पड़ी रही। जोखू कहता –"मालकिन, उठो, मुंह–हाथ धोओ, कुछ खा लो। कब तक इस तरह पड़ी रहोगी?" जोखू की ये बातें सुनकर प्यारी झुंझलाने लगी। उसे झिड़क देने को जी चाहता। पर फिर उसे बुरा लगता। इसमें जोखू का क्या दोष। वह भी तो घर का हिस्सा ही था – उसे कितना दुख होगा।

धीरे–धीरे ज़िन्दगी नया मोड़ लेने लगी। खेती का सारा भार प्यारी पर था। जोखू ने उसका पूरा साथ दिया। दोनों दिन भर खेती के काम में जुटे रहते। खरबूज बोये थे। वह खूब फले और खूब बिके। प्यारी में भी बदलाव नज़र आने लगा। वह साफ–सुथरे कपड़े पहनने लगी। उसने अपने गिरवी रखे गहने छुड़ाये। खाना भी समय से खाने लगी। जोखू में अलग तरह का बदलाव आ रहा था। वह खेती का काम मन लगाकर करने लगा था।

एक शाम प्यारी ने जोखू से कहा – "तुम तो कुछ ज़्यादा ही मेहनत कर रहे हो। कहीं बीमार पड़ गये, तो ?" जोखू बोला – "बीस साल में कभी सिर तक तो दुखा नहीं। आगे की नहीं कह सकता।" प्यारी ने कहा – "मैं क्या जानूं? तुम्हीं आये दिन बीमारी लिए बैठे रहते थे।" जोखू झेंपता हुआ बोला – "वे बातें तब थीं, जब मालिक लोग चाहते थे कि इसे पीस डालें।" प्यारी ने कुछ न कहा, पर उसकी बात मन में बैठ गयी। वह बोली – "तुम पहर रात से पहर रात तक खेत में रहोगे। अकेले मेरा जी



ऊबेगा।" जोखू अचानक बोला – "मैं चलता हूं।" प्यारी ने रोकते हुए कहा – "इतनी रात गए चूल्हा जलाओगे। सगाई क्यों नहीं कर लेते।" जोखू शर्माता हुआ बोला – "किससे सगाई कर लूं ? मैं ऐसी मेहरिया का क्या करुंगा जो गहनों के लिए मेरी जान खाती रहे।" प्यारी ने मुस्कुराते हुए कहा – "ऐसी औरत कहां मिलेगी जो गहने भी न चाहे?" जोखू झट से बोला –"तुमने तो उल्टा अपने सारे गहने दूसरों के ऊपर लगा दिये।"



प्यारी के गालों पर हल्का–सा रंग आ गया। बोली – "अच्छा, और क्या चाहते हो?" जोखू बोला – "मैं कहने लगूंगा तो बिगड़ जाओगी।" प्यारी उसे पीछे की ओर धकेलते हुए बोली –"कहोगे कैसे नहीं?" जोखू बोला – "मैं चाहता हूं कि वह तुम्हारी तरह हो। तब करुंगा, नहीं तो इसी तरह पड़ा रहूंगा।" प्यारी का मन खुशी से झूम उठा। पीछे हटकर बोली – "तुम बड़े नटखट हो गये हो ! हंसी–हंसी में सब कुछ कह गये।"

कलियुग की नौटंकी

गांव में बड़ा सा मेला लगा था। झूले, चाट–पकौड़ी वाले, रंग–बिरंगी दुकानें – रौनक जमी हुई थी। साथ ही नौटंकी के खेल दिखाये जा रहे थे। अगर उनमें औरतों के चटक–मटक नाच होते, तो खूब भीड़ जमा होती। पर जब धार्मिक नाटक खेले जाते, तो लोग कम ही आते।

आज मेले में महाभारत का द्रौपदी चीरहरण दिखाया जाने वाला था। खबर फैली कि नाटक में पंचम बाई द्रौपदी बनेगी। बीस–बाईस साल की जवान पंचम बाई की सुन्दरता मशहूर थी। लोगों के मन में तरह–तरह के ख्याल आने लगे। द्रौपदी के चीरहरण में साड़ी तो ज़रुर खिंचेगी। नाटक वाले भला इतनी लम्बी साड़ी कहां से लायेंगे ? शायद नाटक में पंचम बाई की भरी–पूरी जवानी दिख जाये। बस यही ख्याल बातों में बदले। बातें विश्वास में बदलीं। और लोग कहने लगे कि आज रात कृष्ण भगवान द्रौपदी को नहीं बचायेंगे।



फिर क्या था ? नाटक की टिकटें पलक झपकते ही बिक गयीं। शामियाना खचाखच भर गया। जिनको सीटें नहीं



मिलीं, वे आगे–पीछे खड़े हो गये। नाटक शुरु हुआ। कौरवों के दरबार में पांडवों ने जुए में सारी दौलत लुटा दी। आखिरी दांव पर द्रौपदी को लगाया गया। लोग बेचैन होने लगे। कब पांडव हारें और द्रौपदी सामने आये। आखिर दुशासन द्रौपदी को खींचता हुआ ले आया। द्रौपदी के खुले बाल और सुन्दर चेहरा। गुस्से से कांपती हुई द्रौपदी भीम को कोस रही थी। मगर लोग सुन नहीं रहे थे। सिर्फ देख रहे थे। दिनभर जिस मौके का इन्तज़ार था – वह अब करीब था।

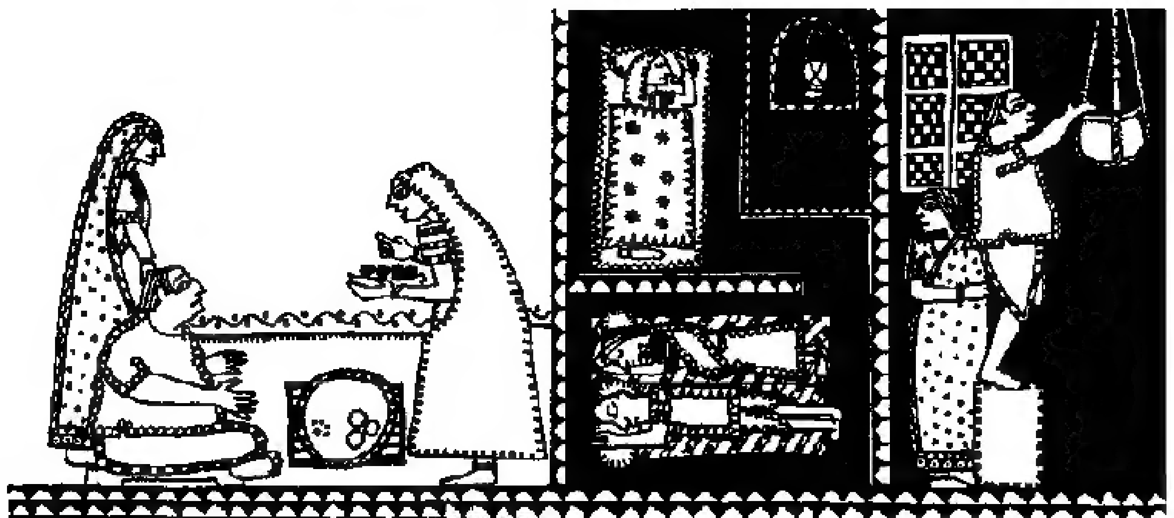
दुशासन ने द्रौपदी के आंचल की तरफ हाथ बढ़ाया। द्रौपदी ने दोनों हाथों से आंचल सीने पर दबाये रखा। वह चीखी–चिल्लायी। राक्षस की तरह हंसते हुए दुशासन ने साड़ी खींचनी शुरू की। द्रौपदी घूमने लगी –एक... दो... तीन... चार... वह घूमती रही, और साड़ी खिंचती गयी। लोगों की सांसें बंद, मुंह खुले थे। लगा, बस अब साड़ी उतरी। लेकिन ऐसा न हुआ। आखिर दुशासन ने हार मान ही ली।

इतना धोखा ! सालो ने सब मज़ा चौपट कर दिया। बेकार ही पैसे खर्चे। टाइम अलग बरबाद हुआ। लोगों के गुस्से का ठिकाना नहीं था। रोड़े–पत्थर, हाथ में जो कुछ आया उसे मंच पर फेंकने लगे। कुर्सियां तोड़ डालीं। और आग लगा दी। शामियाना जल कर राख हो गया।



द्रौपदी नंगी नहीं हुई। मगर समाज ज़रुर नंगा हो गया।

भूत



शादी के बाद धनिया पहली बार ससुराल जा रहा था। धनिया खाने–पीने का शौकीन था। इसलिए उसकी पत्नी कुल्फी ने कहा – "सुनो जी, वहां कम खाना। मेरे घर वाले तुम्हें पेटू न कहें।"

ससुराल पहुंचते ही पकवान पर पकवान परोसे जाने लगे। गर्म–गर्म पूड़ियां, दाल का हलवा! मलाई की लस्सी ! बेचारा धनिया, थोड़ा–सा लेकर हर चीज़ को ना–ना करता। आखिर वह किसी तरह मन मार कर सोने चला। लेकिन आधी रात को उठ बैठा। कुल्फी को जगाकर बोला – "मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं। कुछ तो कर!" दोनों दबे पांव रसोई में पहुंचे। अंदर धनिया को अंधेरे में एक मटका छत से लटकता दिखायी दिया। पास पड़े कनस्तर पर चढ़ गया। झट मटके में हाथ डाला। अरे! यह तो कोई चिपचिपी चीज़ है! घबराकर हाथ झटका तो कनस्तर लुढ़का। ऊपर से उल्टा शहद का मटका।

आवाज़ें सुनकर ससुराल वाले जागे। शहद से लथपथ धनिया ज़मीन से चिपक गया। कुल्फी ने पति को खींच कर सामने की कोठरी में धकेला। धनिया जा गिरा रुई के ढेर पर। शहद में डूबे शरीर पर चिपक गयी सफेद रुई। तब तक ससुराल वाले आंगन में इकट्ठे हो गए। लोगों को आता देख कुल्फी ने पति को कहा – "भागो।" और चिल्लाने लगी "भूत! भूत!" धनिया बाहर दौड़ा। उसे देख डर के मारे सब कमरों में घुस गये। धनिया बाहर नल पर नहाकर आराम से लौट आया।

सुबह भूत की खूब चर्चा हुई। धनिया ने कुल्फी की ओर देखा। दोनों मुस्कुराये। कुल्फी ने चुपचाप धनिया की थाली में दो पूड़ियां और डाल दीं।



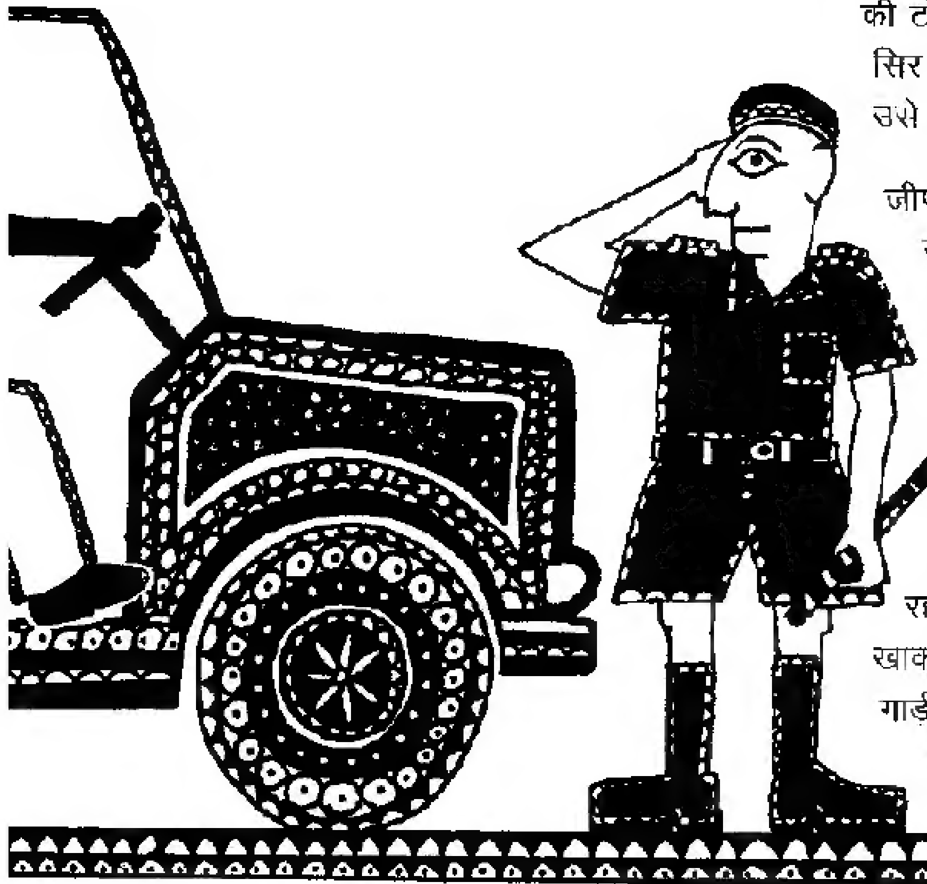
साला मैं तो साहब बन गया

रमई का वक्त खराब चल रहा था। ड्राइवर की नौकरी भी हाथ से गयी। पास बची तो बस एक नयी खाकी वर्दी। और बहुत सा टाइम। इसलिए वह दिनभर अपने दोस्त मोती के यहां बैठा रहता। मोती मोटर गाड़ियां ठीक करने का काम करता था। एक दिन डी.एस.पी. की जीप मोती के यहां लायी गयी। मोती सब काम छोड़ झट खड़ा हो गया। बोला – "हुजूर, थोड़ा टाइम दीजिए। आपकी जीप एकदम नयी कर दूंगा।" रमई की तरफ इशारा करके बोला – "जीप इसके हाथ भिजवा दूंगा।"



जीप ठीक होते–होते शाम हो गयी। रमई ने हाथ मुंह धोया। फिर अपनी खाकी वर्दी पहनी और जीप लेकर निकल पड़ा। वह कुछ

दूर ही गया था कि उसकी नज़र बगल वाली सीट पर पड़ी। 'अरे ! यह तो डी.एस.पी. साहब की टोपी है।' बड़े चाव से उसने टोपी सिर पर टिकायी। टोपी पहनते ही उसे अटपटा सा महसूस हुआ।

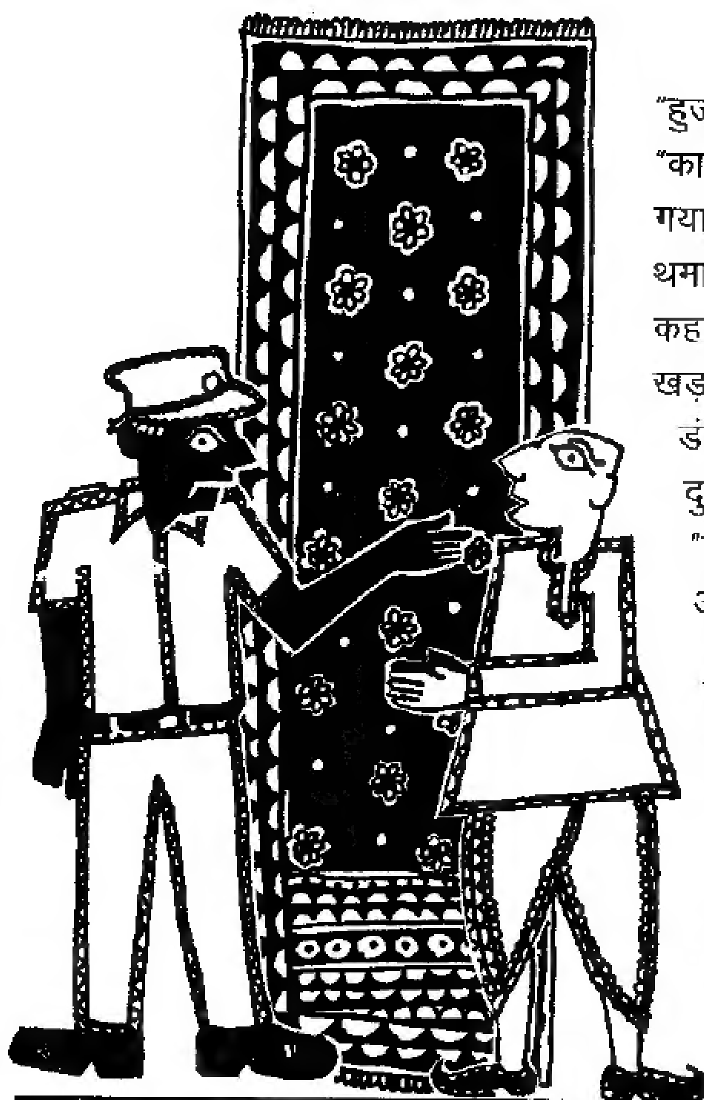


जीप चौराहे पर पहुंची तो सिपाही ने ज़ोर से सलाम ठोका। चलते हुए रिक्शे को रोक, जीप के लिए रास्ता साफ करवा दिया। रमई चौंका – मुझ पर यह मेहरबानी क्यों ? उसने झुककर अपना चेहरा शीशे में देखा। डी.एस. पी. की टोपी उस पर बड़ी जंच रही थी। रमई समझ गया – वर्दी खाकी थी, और फिर डी.एस.पी. की गाड़ी। फटे जूते तो सिपाही देख नहीं पाया। इसीलिए उसने मुझे

डी.एस.पी. मान लिया। बस फिर क्या था। रमई जीप दबाकर और तेज़ चलाने लगा। शहर में भीड़भाड़ बहुत थी। अचानक एक रिक्शा जीप के पीछे टकरा गया। रमई ने जीप रोकी। उतर कर देखा जीप का कोई नुकसान तो नहीं हुआ? जीप ठीक थी। तब भी रमई ने रिक्शा वाले के दो चार थप्पड़ जड़ दिये। साथ ही पांच सौ रुपये जुर्माना मांगा। कांपते हाथों से रिक्शा वाले ने तीन सौ रुपये निकाले। गिड़गिड़ाकर बोला– "इतने ही हैं, साहब।" रमई ने रुपये लिये और कूद कर जीप में बैठ गया।

आगे बाज़ार था। रमई ने सोचा – आज घरवाली के लिए कुछ ले ही चलें। एक छोटी सी दुकान से बीस रुपये की बिन्दी और चूड़ियां खरीदीं। दुकानदार को धमकाया और बिना पैसे दिये ही चल पड़ा।

अब तो रमई की हिम्मत और बढ़ गयी। थोड़ा आगे उसने जीप एक साड़ी की दुकान पर रोकी। साड़ियां छांटने लगा। एक चटकीली, लाल साड़ी पसंद आयी। तीन सौ रुपये की थी। दुकानदार से रौबदार आवाज़ में बोला – "सौ रुपये लगाओ, समझे !" हीं–हीं करते दुकानदार बोला – "मेमसाहब को पसंद करवा लीजिए – दाम का क्या ?" मेरी घरवाली को मेमसाहब कहा जा रहा है– यह सोच कर रमई का सीना फूल गया। दुकानदार फिर बोला – "मैं आदमी घर भेज दूंगा साहब।" रमई गुस्से से बोला – "क्यों ? आदमी क्यों भेजोगे ? हम पर विश्वास नहीं ? सीधा अन्दर कर दूंगा समझे ?" दुकानदार के पसीने छूट गये। तभी दुकानदार की नज़र रमई के जूतों पर पड़ी। झट बात संवारता हुआ रमई बोला – "चोरों के पीछे भागते–भागते जूते घिस गये।" दुकानदार ने तपाक से पूछा –



"हुजूर, चाय पीयेंगे या काफी?" रमई ने कहा – "काफी पिलाओ।" काफी आते–आते थोड़ा टाइम लग गया। काफी पीकर रमई ने दुकानदार को सौ रुपये थमाये; और बोला – "मैं साड़ी ले जा रहा हूं।" यह कहकर जैसे ही मुड़ा, तो सामने असली डी.एस.पी. खड़ा था। पल में ही टोपी उतर गयी। तड़ा–तड़ जो डंडे पड़े तो जुबान को लकवा मार गया। उधर दुकानदार पास खड़े आदमी से कह रहा था – "कच्चा था बेचारा। सौ रुपये देने को जो कहा। असली डी.एस.पी. होता तो एक धेला न देता।"

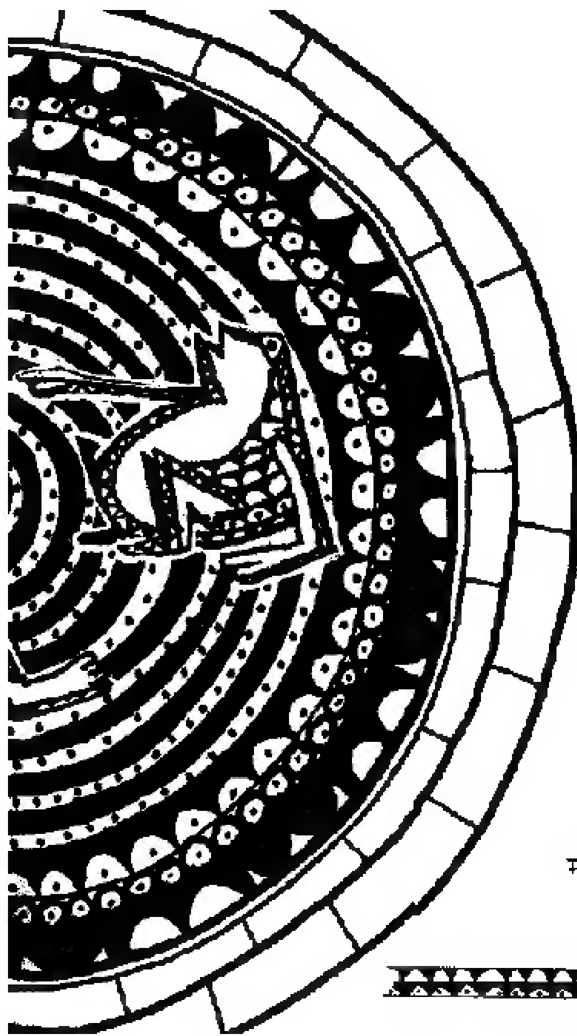
डी.एस.पी. मारते–मारते बोला – "बहुत बड़ा बनने चला था।" मरी सी आवाज़ में रमई बोला – "मेरा कोई कसूर नहीं है मालिक। कसूर इस टोपी का है। पहनते ही दिमाग घूम गया। इसकी गर्मी सहन नहीं हुई। हुजूर, पता नहीं आप लोग कैसे सहते हैं ?"

जीना भी मुश्किल मरना भी मुश्किल



ठाकुरों के जुल्म कौन नहीं जानता। पर चुपचाप जुल्म सहने वाले भी बहुत हैं। दबे हुओं को सभी दबाते हैं। ऐसा ही एक रैगर के साथ हुआ।

टीकरी गांव में एक रैगर रहता था। वह ठाकुर के यहां मरे जानवरों की खाल निकाला करता था। ठाकुर उससे कई और काम भी करवाता। पर इस मेहनत के लिए एक धेला न देता। रैगर कभी कुछ न कह पाया। आखिर वह इस बेगार की ज़िन्दगी से तंग आ गया। और एक कुएं में जा कूदा।



उस कुएं में एक मेंढक रहता था। रैगर के गिरने का धमाका सुनकर मेंढक रौब से बोला – "कौन है रे ?" रैगर घबरा गया। थर–थर कांपते हुए बोला – "ऐ मेरे बाप, मैं तो ठाकुर का रैगर हूं।" यह सुनते ही मेंढक छाती फुलाकर गरज उठा। "रैगर होकर मुझे कच्ची नींद से जगा दिया। खैर, पर आया ठीक मौके से। पहले कुएं में जमी काई निकाल और फिर पानी से मिट्टी भी। इस गन्दे कुएं में मुझे चैन नहीं। आगे भी जो काम बताऊं, उसे फटाफट करता जा।"

रैगर ने सोचा – बेगार की ज़िन्दगी से परेशान होकर मरने चला था। पर यहां भी बेगार से छुटकारा नहीं।

मलबे का मालिक

बंटवारे के सात साल बाद मुसलमानों की एक टोली हिन्दुस्तान आयी। बहाना खेल देखने का था। पर वे आये थे अपने छूटे हुए शहर को देखने। रिश्तेदारों और दोस्तों को मिलने। अमृतसर के बाज़ार में घूमते हुए पुरानी यादें ताज़ा कर रहे थे। कोई बोला – "अरे ! यहां हकीम की दुकान हुआ करती थी।" दूसरा बोला– "जहां पान वाला बैठा है, वहां सुक्खी की भट्ठी होती थी।"



अब साढ़े सात साल बाद कई इमारतें फिर खड़ी हो गयी थीं। पर जगह–जगह दंगों के निशान अभी तक नज़र आ रहे थे। ईंट और पत्थर के ढेर देखते ही वे भयानक दिन याद आ जाते। मन में वही डर छा जाता। लेकिन फिर कोई पुराना दोस्त गले लग जाता। जो लाहौर छोड़ हिन्दुस्तान आये थे, वे वहां के हालचाल पूछने लगते। पर कभी ऐसा होता कि उनको देख लोग रास्ते से हट जाते।

इसी टोली के गनी मियां एक मुहल्ले में खोये–खोये से घूम रहे थे। अचानक एक गली में आकर वे रुक गये। वहां एक रोता हुआ बच्चा नज़र आया। गनी मियां ने उसे बुलाने को हाथ बढ़ाया। लेकिन एक लड़की ने बच्चे को उठाते हुए कहा – "चुप हो जा। नहीं तो वह

मुसलमान पकड़कर ले जायेगा।" गनी मियां का हाथ वहीं रुक गया। तभी उनको एक नौजवान लड़का नज़र आया। उन्होंने आवाज़ दी – "मनोरी बेटा !" लड़के ने ध्यान से देखा – "अरे ! गनी मियां।" गनी मियां बोले – "हां बेटा। वही चिरागदीन का बदनसीब बाप! बंटवारे से पहले अकेला पाकिस्तान गया था। यहां रहता तो अच्छा होता। उनके साथ मैं भी खत्म हो जाता।" गनी मियां का गला भर आया। फिर बोले –"चिराग और उसके बीवी बच्चे तो नहीं मिल सकते। सोचा, मकान ही देख लूं।"



मनोरी ने प्यार से गनी मियां का हाथ पकड़ा। और उन्हें एक मलबे के ढेर के पास ले गया। बोला –"यही है तुम्हारा मकान।" गनी मियां चीख उठे – "बस यही रह गया है! हाय चिरागदीन! इसी के लिए तू पीछे रुका था ?"

खिड़की से झांकते पड़ोसी सोच रहे थे – आज सारी बात खुल जायेगी। कैसे राका पहलवान ने चिरागदीन को मार डाला। उसकी बीवी–बच्चियों की इज़्ज़त लूटकर लाशें नदी में फेंक दीं। दंगों का तो बहाना था। राका को घर का लालच था। मगर किस्मत देखो – दंगों में घर ही जल गया। मलबा रह गया है – सो राका उसी का मालिक बना घूमता है।



गनी मियां लौटने लगे। रास्ते में राका पहलवान मिला। उसे देखते ही गनी मियां का दिल भर आया। बोले – "राका ! चिरागदीन तो तेरा सगा दोस्त था। वह तेरे घर जाकर क्यों नहीं छिपा ? वह तो हमेशा कहता था – अपनी गली में क्या डर ! और राका के होते मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" राका गनी मियां से एक शब्द न कह पाया। उसका बदन पसीने से भीग गया। सांस लेने में भी तकलीफ होने लगी। यह देख गनी मियां ने कहा – "मन छोटा न कर राका ! चिरागदीन नहीं, पर तुम लोग तो हो। अल्लाह तुझे खुशियां दे। मुझे याद रखना राका।" यह कहकर गनी मियां धीरे–धीरे गली से बाहर चले गये।

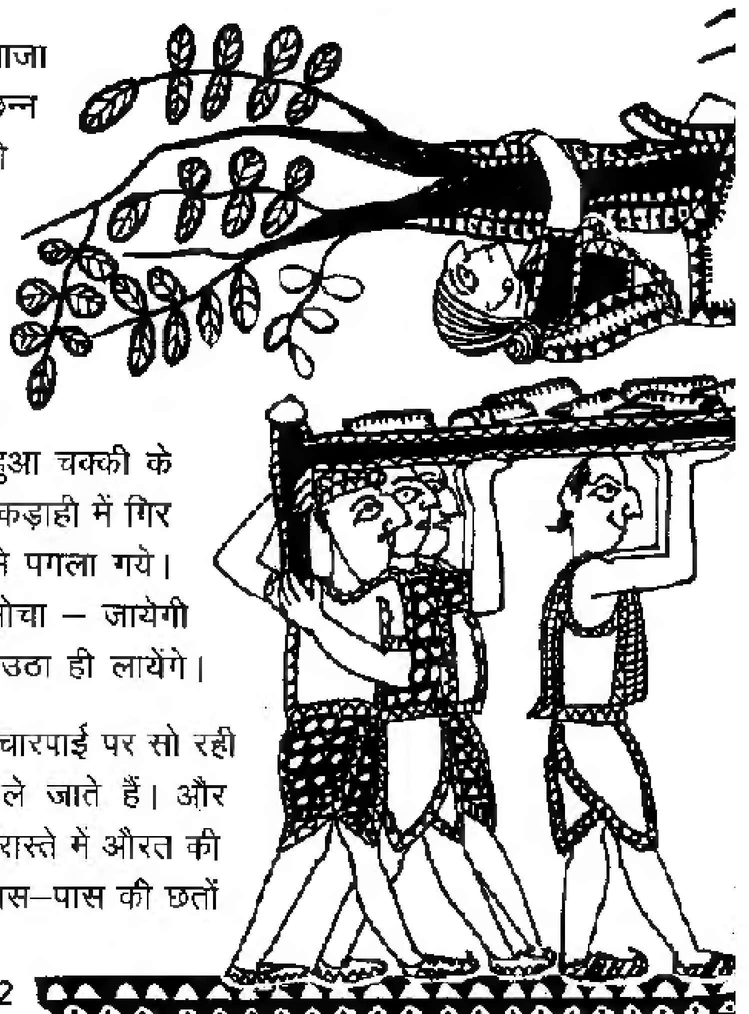
किस्सा सात ठगों का



सात ठग थे। लोगों को चकमा देने में सभी तेज़ थे। सातों थे कुंवारे। अपनी हालत से तंग आकर एक तरकीब बनायी। एक दिन पास के गांव गये। और एक औरत के घर जाकर बोले–"हम तुम्हारे भाई हैं। तुम्हें लेने आये हैं।" वह औरत छोटी उम्र में ब्याह दी गयी थी। तब से ससुराल में पीहर वालों का आना मना था। इसलिए उनको पहचानने का कोई सवाल ही नहीं था। ठगों को देख औरत ने सोचा – कैसे नौजवान हो गये हैं मेरे भाई। वह उनके साथ खुशी–खुशी चल पड़ी।

घर पहुंचकर सातों ठग आपस में झगड़ने लगे। एक बोला – "यह मेरी है। मुझसे ही शादी करेगी।" दूसरा बोला – "नहीं, यह मेरी पत्नी होगी।" इस तरह सातों के बीच चिल्ला–चिल्ली होने लगी। पर कुछ समय बाद एक रास्ता निकला। तय हुआ कि वह औरत सबसे बड़े भाई से ब्याहेगी। पर बाकी सबका भी काम चलेगा।

औरत ने यह सब सुन लिया। और वहां से भागने की ठानी। जैसे ही ठग धंधे के लिए घर से निकले, वह बाहर से एक कुत्ता लायी। कुत्ते का मुंह बांधकर उसे चक्की के साथ बांधा। चूल्हा जलाकर तेल से भरी कड़ाही चढ़ायी। उसके ऊपर एक गीला कपड़ा टांगा। और भाग गयी।



जब ठग घर लौटे तो देखा कि रसोई का दरवाजा भिड़ा हुआ है। अन्दर से घरड़–घरड़ और छन्न–छन्न की आवाजें सुनायी दीं। ठगों ने सोचा – चक्की में कुछ पीसा जा रहा है। और कड़ाही में पूड़ियां बन रही हैं। खुश होकर सातों ठग खाने की ताक में बैठ गये। काफी समय गुज़र गया। जब और इंतज़ार न हो पाया तो ठग रसोई में घुसे। अरे ! यह क्या ! न पूड़ी, न भाभी। वहां तो बस एक कुत्ता छटपटाता हुआ चक्की के चक्कर काट रहा था। और गीले कपड़े से बूंदें कड़ाही में गिर रही थीं। औरत की चालाकी देख ठग गुस्से से पगला गये। अरे ! यह तो हमें ही चकमा दे गयी। फिर सोचा – जायेगी कहां ? अपने घर तो पहुंचेगी। इस बार उसे उठा ही लायेंगे।

उस रात सातों ठग औरत के घर लौटे। औरत चारपाई पर सो रही थी। ठगों ने सोचा कि उसे सोता हुआ ही ले जाते हैं। और चारपाई को अपने कंधों पर उठाकर चल पड़े। रास्ते में औरत की आंख खुली। उसने झट दिमाग चलाया और आस–पास की छतों



से खपरैल उठाकर चारपाई पर रखने लगी। चारपाई भारी हुई। ठगों ने सोचा भाभी ने एक तरफ करवट ली है। इसलिए वजन ज़्यादा लग रहा है। तभी रास्ते में एक बड़ा पेड़ मिला। औरत उसकी टहनी पकड़कर लटक गयी। ठगों को चारपाई हल्की लगी। सोचा भाभी ने बहुत देर बाद करवट बदली है। कुछ दूर जाकर ठग आराम करने रुके। चारपाई नीचे रखी तो देखा, उसमें बस खपरैल थी। और भाभी फिर गायब ! ठग वापस रास्ता नापने लगे। अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। थके हारे वह उसी पेड़ के नीचे सो गये। पहरा देने के लिए एक ठग जगा रहा। थोड़ी देर बाद पेड़ पर बैठी औरत ने उसे ऊपर बुलाया। बोली– "मैं तो तुमसे शादी करना चाहती हूं। पर तुम्हारे भाइयों के जगने से पहले शादी कर लेनी चाहिए।" ठग चौंका – "यहां शादी कैसे कर सकते हैं?" औरत बोली–"शादी तो झट हो जायेगी। अपने सुपारी काटने वाले सरौते को मेरी जीभ पर सात बार छुआओ।" ठग ने वैसा ही किया। अब औरत की बारी आई। उसने सरौता ठग की जीभ पर छह बार छुआया। और सातवीं बार सरौते को जोर से जीभ पर मारा। ठग की जीभ कट गई। वह चीखता हुआ पेड़ से गिरा। उसे भूत समझकर छह के छह भाई वहां से भागे।

अब यह हार–जीत का सवाल बन गया। गुस्से से भरे ठग फिर औरत

के घर पहुंचे। वह चुपचाप अन्दर घुसना चाहते थे। इसलिए घर की कच्ची दीवार में छेद बनाने लगे। आहट सुनकर औरत तैनात हो गयी। जैसे ही पहले ठग ने सिर अन्दर किया, औरत ने उसका सिर काट दिया। फिर बाकी शरीर अंदर खींच लिया। इस तरह उसने सातों के सिर काट दिये।

अब लाशों का क्या करे? तभी एक भिखारी आया। औरत ने कहा – "बाबा एक लाश फेंकनी है।" बाबा ठहरा गरीब, काम के लिए तैयार हो गया। औरत बोली – "लाश दूर जाकर फेंकना। नहीं तो वापस भाग आती है।" लाश को दूर फेंक बाबा लौटा। औरत बोली – "लाश तो वापस आई है! तुमने दूर जाकर नहीं फेंका होगा।" बाबा दूसरी लाश उठाकर फिर चल पड़ा . . .



हमारे पन्ने खत्म होने को आये, पर सुनाने वाले की बात नहीं। बस ! कड़ी से कड़ी जुड़ती जायेगी – और किस्सा भी लम्बा होता जायेगा . . .